जीव हिंसा से बचना जरूरी

– युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 2 मई।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के पावन सान्निध्य में युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जिस भाषा से हिंसा की बात जुड़ी हुई है। जो भाषा हिंसा की उत्प्रेरणा देने वाली हो वह भाषा बंधन पैदा करती है। उन्होंने कहा कि जीवन का लक्ष्य अहिंसा का विकास होना चाहिए। जीव हिंसा से बचना अहिंसक जीवन शैली का पहला चरण है।

''श्रावक लोग सामायिक लेते हैं पाठ का उच्चारण करते हैं कि हे! प्रभो मैं सामायिक कर रहा हूं और अशुभ योग का त्याग करता हूं। सामायिक के दौरान कोई ऐसा काम नहीं करूंगा जो पाप से शुरू होगा वह काम मैं न मन से करूं न वाणी से करूं और न शरीर से करूं। भाषा के संदर्भ में बताया है कि साधु सावद्य भाषा नहीं बोले। दर्शन करो, व्याख्यान सुनो यह कह सकते हैं, जहां हिंसा से जुड़ा हुआ निर्देश हो ऐसा निर्देश साधु न दे।''

युवाचार्यश्री ने यह भी कहा साधु की भाषा अर्थपूर्ण होनी चाहिए, निरर्थक भाषा एक साधु को नहीं बोलना चाहिए। तेरापंथ और स्थानकवासी संप्रदाय के साधु–साध्वियां मुखवस्त्रिका रखते हैं पुरानी परंपरा है मुखवस्त्रिका रखने का मुख्य कारण है कि खुले मुंह बोलने से वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है इसलिए मुखवस्त्रिका से वायुकाय के जीवों की हिंसा से बचा जा सकता है। दूसरा कारण यह है कि खुले मुंह बोलते हैं शास्त्र आदि को पढ़ते हैं, थूक शास्त्र के पन्नों को लग जाए या सामने वाले व्यक्ति के उपर लग जाए तो आशातना होती है। तीसरा कारण है कि मुखवस्त्रिका रखने से साधु को यह भान हो जाए कि मुझे बोलने का संयम करना चाहिए। बोलने से संयम करने की प्रेरणा मुखवस्त्रिका से मिलती है। साधु का धर्म है कि अहिंसा, सच्चाई के पथ पर अग्रसर होते हुए दूसरों को सद्प्रेरणा दे जिससे दूसरे व्यक्ति प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन अच्छा बना सकते हैं।